और मैंने माना था। जब हम बाबा के बन गये तो पवित्रता का यह व्रत आजीवन बन गया।

सत्ताइस नवंबर, 1960 को माधवबाग में लक्ष्मीनारायण मंदिर के सामने मैदान में हमारा लौकिक विवाह संपन्न हुआ। अठाइस नवंबर, 1960 को मेरी लौकिक माता हम दोनों को ब्रह्मा बाबा से मिलाने के लिए लेकर गई। ब्रह्मा बाबा उस समय मुंबई में ही थे। बाबा को देखते ही ऊषा चौंक पड़ी कि यह तो वही व्यक्ति है जो प्रात: 4 बजे खिड़की से कृष्ण के चित्र पर रोशनी डाला करते थे जिससे श्रीकृष्ण का चित्र रमेश के चित्र में बदल जाता था। 'गीता का भगवान कौन?' विषय पर ब्रह्मा बाबा के साथ ऊषा की तीन-चार बार बहस हुई। बाद में ब्रह्मा बाबा ने कहा कि आप और रमेश आबू आना, वहाँ इस विषय पर बहस करेंगे। बाद में मई 1961 में हम आबू गए, करीब 12 दिन वहाँ रहे। विदाई देते समय ब्रह्मा बाबा पिछले दरवाज़े से निकल बरगद के पेड़ तक आए। विदाई के समय ब्रह्मा बाबा की आँखों में दो बूंद अश्रु के मोती जगमगाने लगे और उसी ने तीर के मुआफिक हम दोनों के हृदय को शिवबाबा का बना दिया।

मुंबई में सात दिनों के लिए प्रात: 5 बजे विशेष योग का कार्यक्रम वाटरलू मेन्शन सेवाकेन्द्र पर प्रारंभ हुआ। इस कार्यक्रम ने हम दोनों में ज्ञान के फाउंडेशन को मज़बूत कर दिया। राखी के त्योहार पर दादी निर्मलशान्ता की अध्यक्षता में राखी की सेवा करने की प्लैनिंग हुई। मैंने ड्रामा लिखा, शीर्षक था – 'प्रभु की खोज', ऊषा उसमें मुख्य नायिका थी जो प्रभु दर्शन की प्यासी थी और प्रभु मिलन के लिए आक्रंद करती थी। ऊषा ने इतना सुंदर अभिनय किया कि आधे से ज्यादा दर्शकों की आँखों से आँसू बहने लगे। ड्रामा के बाद दादी मेहमानों के साथ व्यस्त थी इसलिए दादी जी ने संदेश भेजा कि ऊषा को बोलो कि प्रवचन भी करे। ऊषा ने फौरन ही बहुत सुंदर प्रवचन किया। ऊषा बहन की यह विशेषता थी कि वह कभी भी ईश्वरीय सेवा के लिए ना नहीं कहती थी, ना शब्द उनकी डिवाइन डिक्शनरी में था ही नहीं। नवंबर, 1961 में ब्रह्मा बाबा मुंबई आए। रोज़ सुबह हम दोनों बाबा को लेकर गार्डन घूमने जाते तब बाबा से ज्ञान की अनेक गुह्य बातें सुनने को मिलती थीं।

सन् 1963 में ब्रह्मा बाबा से गीत बनाने की श्रीमत मिली। ऊषा ने शास्त्रीय व सुगम संगीत का अभ्यास किया हुआ था। इसी कारण उन्होंने ललित सोडा से मिलकर घर में ही पहला-पहला गीत 'वसुधा के इस अंचल में..' रिकार्ड किया और फिर मधुबन ब्रह्मा बाबा को भेजा। मधुबन में गुरुवार के भोग में यह गीत दो बार बजाया गया। भोग में यह संदेश मिला कि बच्चों की बुद्धि राइट डायरेक्शन में चल रही है और पहला गीत बाप के स्वागत का बनाया है। दुनियावी कार्यक्रम में भी स्वागत गीत ही पहले होता है, बच्चों ने भी स्वागत गीत द्वारा मेरे दिव्य अवतरण की महिमा गाई है। बाबा ने भोग के संदेश में मुझे व ऊषा को वरदान दिया कि बच्चे, और भी ऐसे गीत बनाओ। बाद में हमने गीतों के दो रिकॉर्ड भी बनवाये और वे गीत आल इंडिया रेडियो को दिये। उस समय जब रेडियो पर रिकार्ड बजते थे तो हरेक गीत के लिए रॉयल्टी मिलती थी। दोनों गीतों की रॉयल्टी सारे हिंदुस्तान से मिलती रही और रिकार्ड के खर्च से ज्यादा आमदनी हुई। बाद में रेडियो वालों ने निर्णय बदला व रॉयल्टी देना बंद किया।

मई 1962 में हमने उत्तरी भारत के सभी सेवाकेन्द्रों का दौरा किया तथा अंत में मधुबन पहुँचे। दो दिन बाद मातेश्वरी हापुड़, दिल्ली आदि शहरों का चक्कर लगाकर मधुबन पधारी। फिर हमने मातेश्वरी जी को भी मुंबई आने का निमंत्रण दिया। इससे पहले भी सन् 1957 में मातेश्वरी व ब्रह्मा बाबा मेरे व शांता माता के निमंत्रण पर साढ़े चार मास मुंबई में रहकर गए थे। इस समय भी